

डॉ. रोजर ग्रीन, अमेरिकी ईसाई धर्म, सत्र 2 1, नव-रूढ़िवाद और सामाजिक संकट

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अमेरिकी ईसाई धर्म पर अपने शिक्षण में हैं। यह नव-रूढ़िवाद और सामाजिक संकट पर सत्र 21 है।

हम व्याख्यान संख्या 16, नव-रूढ़िवाद और सामाजिक संकट में हैं।

पहली बात जो हम कर रहे हैं वह है नव-रूढ़िवाद पर पृष्ठभूमि प्रदान करना। और आपको याद दिलाने के लिए, बस आपको याद दिलाने के लिए कि हमने पृष्ठभूमि में क्या कहा था, वह यह था कि ईसाई 30, 40, 50, 60 के दशक में आए थे। उन्होंने पाया कि अमेरिका दाईं ओर कट्टरवाद और बाईं ओर उदारवाद के बीच बहुत विभाजित था, जो एक तरह से दिवालिया हो गया था।

और इसलिए, उन्हें लगा कि अमेरिकियों को एक बहुत ही स्वस्थ प्रोटेस्टेंटवाद की आवश्यकता है। और इसलिए, एक आंदोलन शुरू हुआ जिसे नियो-ऑर्थोडॉक्सी कहा जाता है। याद रखें, हमने नियो-ऑर्थोडॉक्सी कहा। इसका कारण यह है कि यह एक रूढ़ि थी जो धर्मग्रंथों पर केंद्रित थी और बड़े पैमाने पर सुधारकों और विशेष रूप से कैल्विन के माध्यम से व्याख्या की गई थी, विशेष रूप से नहीं बल्कि विशेष रूप से कैल्विन के माध्यम से।

तो, यह एक नई रूढ़िवादिता है। यह 20वीं सदी में अस्तित्व में आई शास्त्रीय रूढ़िवादिता का एक तरह का सुधार है। लेकिन ये लोग और यह एक बहुत ही मजबूत बौद्धिक आंदोलन था, जिस पर हम भी जोर देंगे।

लेकिन ये लोग बौद्धिक रूप से वैज्ञानिक दुनिया को अपनी मर्जी से काम करने की अनुमति दे सकते थे। विज्ञान और धर्म के बीच कोई लड़ाई नहीं थी। वे एक हद तक बाइबिल की आलोचना की अनुमति दे सकते थे।

वे जानते थे कि बाइबिल की आलोचना की अपनी सीमाएँ हैं, लेकिन बाइबिल की आलोचना का मतलब जरूरी नहीं कि बाइबिल का अंत हो। इसलिए, वे इसके लिए अनुमति दे सकते थे। वे शहरी जीवन और शहरी जीवन के विकास और वृद्धि के लिए अनुमति दे सकते थे।

वे शहरी जीवन को चर्च का दुश्मन या ऐसा कुछ नहीं मानते थे। इसलिए, वे इसकी अनुमति दे सकते थे। वे अमेरिका में आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं की आलोचना की भी अनुमति दे सकते थे।

सिर्फ इसलिए कि आप आर्थिक संरचनाओं या सामाजिक संरचनाओं की आलोचना कर रहे हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि आप बाइबल के ईसाई नहीं हैं। इसलिए, वे इसकी अनुमति दे

सकते थे और उन्होंने इसकी अनुमति दी भी। इसलिए, मुझे लगता है कि अगर मैं गलत नहीं हूँ, तो हम अब तक यहीं तक पहुँचे हैं।

तो, हम अभी भी नव-रूढ़िवाद की पृष्ठभूमि पर हैं। तो, हम यहीं हैं। बहुत से नव-रूढ़िवादी लोग राजनीतिक वास्तविकताओं में शामिल हो गए।

वे बाइबिल धर्मशास्त्र को समझने और बाइबिल धर्मशास्त्र को उस दुनिया की राजनीतिक वास्तविकताओं से जोड़ने में बहुत चतुर थे जिसमें वे खुद को पाते थे। इसलिए, उन्होंने बाइबिल की समझ को उस राजनीतिक दुनिया को समझने में मदद करने के लिए अनुमति दी जिसमें हम रहते हैं। तो यहाँ कुछ राजनीतिक वास्तविकताएँ हैं जिनका उन्होंने सामना किया।

शायद दूसरे लोग इन राजनीतिक वास्तविकताओं का सामना नहीं करना चाहते थे। यहाँ कुछ ऐसी वास्तविकताएँ हैं जिनका सामना उन्होंने किया, नव-रूढ़िवादियों ने किया। सबसे पहले, नव-रूढ़िवाद इस दुनिया की पापपूर्णता पर बहुत बड़ा था।

अगर हम सोचते हैं कि 20वीं सदी ईसाईयों की सदी थी, तो हम पाप को बहुत गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। क्योंकि प्रथम विश्व युद्ध और होलोकॉस्ट और द्वितीय विश्व युद्ध वगैरह। इसलिए, पाप की वास्तविकता, जिस दुनिया में हम रहते हैं उसकी बुराई और मनुष्यों की पापपूर्णता बहुत स्पष्ट है।

हम जिन लोगों के बारे में बात करने जा रहे हैं उनमें से एक हैं रेनहोल्ड नीबहर। आपको अभी नाम के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। वह यहाँ बीच की तस्वीर में हैं।

रेनहोल्ड नीबहर ने यह कहा: मूल पाप सभी सिद्धांतों में सबसे अधिक अनुभवजन्य है। मूल पाप सभी सिद्धांतों में सबसे अधिक अनुभवजन्य है। अब अगर हम कुछ ऐसा कहते हैं जो अनुभवजन्य है, तो हमारा क्या मतलब है? अगर कुछ अनुभवजन्य है तो हमारा क्या मतलब है? सभी सिद्धांतों में सबसे अधिक अनुभवजन्य? इसका क्या मतलब है? इसका मतलब है कि अगर आप इसे अपनी आँखों से देख सकते हैं या इसे महसूस कर सकते हैं तो कुछ अनुभवजन्य है।

तो, मूल पाप सभी सिद्धांतों में सबसे अधिक अनुभवजन्य है। आपको इस बात पर बहस करने की ज़रूरत नहीं है कि दुनिया में पाप जैसी कोई चीज़ है या नहीं। आपको बस प्रथम विश्व युद्ध या द्वितीय विश्व युद्ध को देखना है। होलोकॉस्ट को देखें।

आपको पाप के पक्ष में इस तरह तर्क करने की ज़रूरत नहीं है जैसे कि यह वास्तविकता नहीं है। इसलिए, सभी सिद्धांतों में सबसे अधिक अनुभवजन्य होने के कारण, सभी सिद्धांतों में सबसे अधिक दृश्यमान और मूर्त मूल पाप है। तो यह सबसे पहले, पापपूर्णता की भावना है।

चलो पाप के बारे में बात करते हैं, नए रूढ़िवादी लोगों ने कहा। उदारवादी पाप के बारे में बात नहीं करना चाहते थे। उदारवादियों ने बस एक ईसाई सदी देखी, और सब कुछ अच्छा होने वाला था, और हम हाथ मिलाएंगे और पूरे समय कुम्बाया गाएंगे या कुछ ऐसा।

वे बस इसी बारे में बात करना चाहते थे। नहीं, नया रूढ़िवादी आ गया है और पाप के बारे में बात करता है। नंबर दो सभी राष्ट्रों की सीमाएँ हैं।

सभी राष्ट्रों की अपनी सीमाएँ होती हैं, और निश्चित रूप से, सभी राष्ट्रों की अपनी विशेषताओं में सीमाएँ होती हैं। राष्ट्र कभी-कभी ऐसे तरीके अपनाते हैं जो उनके अपने भौतिक अस्तित्व के विपरीत होते हैं, अपने पड़ोसियों के भौतिक अस्तित्व के लिए तो छोड़ ही दीजिए। इसलिए, सभी राष्ट्र ऐसे तरीके अपनाते हैं जो उनके और उनके पड़ोसियों के लिए विरोधाभासी होते हैं, और आइए हम इसे पहचानें।

अब, इस दूसरे बिंदु के अंतर्गत, जो यहाँ थोड़ा सा पेचीदा हो गया, नए रूढ़िवादी धर्मशास्त्रियों ने कहा कि सभी राष्ट्रों में सीमित गुण होते हैं। सभी राष्ट्र कभी-कभी अमेरिका सहित अन्य राष्ट्रों पर प्रभुत्व जमाना चाहते हैं। इसलिए, अमेरिका में जो नए रूढ़िवादी धर्मशास्त्री थे, वे अमेरिका के पीछे पड़ गए और उनकी सीमाएँ थीं।

अब, इस दूसरे बिंदु के अंतर्गत, जहाँ तक उनका संबंध है, आप इससे सहमत नहीं हो सकते हैं; आप इसे अन्यथा देख सकते हैं, लेकिन मैं सिर्फ नए रूढ़िवादी धर्मशास्त्रियों को समझने की कोशिश कर रहा हूँ। जहाँ तक उनका संबंध है, एकमात्र समय जब परमेश्वर ने किसी राष्ट्र के साथ ठीक से व्यवहार किया है, वह इज़राइल के साथ है। इसलिए, जहाँ तक उनका संबंध है, वह एकमात्र समय है जब उसने लोगों के एक राष्ट्र के साथ व्यवहार किया है।

अब, हम अब इज़राइल की दुनिया में नहीं रहते हैं। हम चर्च की दुनिया में रहते हैं, मसीह का शरीर, और चर्च सार्वभौमिक है। चर्च किसी एक राष्ट्र से जुड़ा नहीं है। चर्च किसी एक राष्ट्र द्वारा नियंत्रित नहीं है, न ही चर्च किसी एक राष्ट्र को नियंत्रित करता है।

इसलिए, चर्च दुनिया भर में मसीह का शरीर है। इसलिए सावधान रहें, नए रूढ़िवादी धर्मशास्त्री कह रहे थे, अब किसी भी एक राष्ट्र के साथ ईश्वर को जोड़ने से सावधान रहें। ऐसा इज़राइल के साथ हुआ था, लेकिन उसके बाद ऐसा नहीं हुआ।

अब आप ईश्वर को उसके शरीर से, धरती पर मसीह के शरीर से, चर्च से जोड़ते हैं, और यह सार्वभौमिक है। यह सभी देशों में है। यह अंतरराष्ट्रीय है।

तो, वे इस बारे में बहुत अच्छे थे। नंबर तीन, राजनीतिक शक्ति की वास्तविकताएँ। जब आप राजनीतिक शक्ति देखते हैं, तो आप उस राजनीतिक शक्ति को अनदेखा करके कोई लाभ नहीं उठाते हैं।

आपको उस राजनीतिक शक्ति का सामना करना होगा और देखना होगा कि वह कहाँ जा रही है और क्या वह अपने वादों को पूरा कर रही है। इसका एक आदर्श उदाहरण यह है कि हममें से कुछ लोग बोनहोफ़र सेमिनार में हैं, इसलिए इसका एक आदर्श उदाहरण, निश्चित रूप से, डिट्रिच बोनहोफ़र है। डिट्रिच बोनहोफ़र ने एक ऐसी राजनीतिक शक्ति का सामना किया जिसके बारे में उन्हें यकीन था कि अब वह ईश्वर की कृपा से नियंत्रित नहीं है।

वह राजनीतिक शक्ति, नाज़ीवाद, अपनी सीमाओं को लांघ चुकी थी। अब वह वैध राजनीतिक शक्ति नहीं रह गई थी। अब वह अवैध राजनीतिक शक्ति बन गई थी।

इसने उन सीमाओं को लांघ दिया था जिन्हें परमेश्वर राष्ट्रों की स्थापना करते समय और सत्ता स्थापित करते समय स्थापित करता है। इसलिए, क्योंकि इसने तब सीमाओं को लांघ दिया था, हमने बोनहोफ़र सेमिनार में इस बारे में बात की थी, लेकिन क्योंकि यह था, डिट्रिच बोनहोफ़र हिटलर की हत्या की साजिश में शामिल हो गया। बोनहोफ़र के लिए यह एक कठिन रास्ता था क्योंकि बोनहोफ़र एक पादरी था।

वह कुछ हद तक शांतिवादी थे। वह एक ईसाई धर्मशास्त्री थे। इसलिए, इस तरह के व्यक्ति के लिए हिटलर की हत्या की साजिश में शामिल होना, उसे यह महसूस करना था कि राजनीतिक शक्ति ने अपनी शक्ति की सीमाओं को पार कर लिया है और जर्मनी के उद्धार के लिए, पश्चिमी सभ्यता के उद्धार के लिए उसे नीचे लाया जाना चाहिए।

इसलिए, नव-रूढ़िवादी धर्मशास्त्री वास्तव में, राजनीतिक शक्ति की वास्तविकताओं से निपटना चाहते थे। राजनीतिक शक्ति की समस्याओं से निपटना ज़रूरी था। इसलिए, वे किसी भी ईसाई समूह, चर्च या संप्रदाय के खिलाफ़ थे जो अपनी आँखें बंद करके रखते थे, जो यह नहीं देखना चाहते थे कि 20वीं सदी में क्या हो रहा था, या जो यह नहीं देखना चाहते थे कि नाज़ीवाद के साथ क्या हो रहा था।

नव-रूढ़िवादी लोग इसके खिलाफ़ थे। यह कोई रास्ता नहीं है। और फिर चौथी बात, और हम पहले ही इन लोगों के साथ इस बारे में बात कर चुके हैं, लेकिन चौथी बात यह है कि यह नव-रूढ़िवाद अमेरिकी प्रोटेस्टेंटवाद के भीतर एक महान बौद्धिक परंपरा बन गई।

इसलिए, नव-रूढ़िवादी धर्मशास्त्रियों ने कहा, आप भगवान की पूजा तब करते हैं जब आप अपने दिमाग से उनकी पूजा करते हैं। आप भगवान का सम्मान तब करते हैं जब आप अपने दिमाग का इस्तेमाल अपने आस-पास की दुनिया को समझने और अपने आस-पास की दुनिया की सेवा करने के लिए करते हैं। यह अमेरिका और यूरोप में भी एक बहुत शक्तिशाली बौद्धिक परंपरा और बौद्धिक आंदोलन बन गया।

इसलिए, अपने मन से ईश्वर की आराधना करना और ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए अपने मन का उपयोग करना इन नव-रूढ़िवादी धर्मशास्त्रियों के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। अब, कुछ हद तक वे अमेरिकी कट्टरवाद के खिलाफ़ तर्क दे रहे हैं क्योंकि कुछ अमेरिकी कट्टरवाद था, सभी नहीं, लेकिन कुछ अमेरिकी कट्टरवाद था जो काफी बौद्धिक विरोधी था, और नव-रूढ़िवादी महसूस करते थे कि यह बाइबिल का तरीका नहीं है, यह ईसाई तरीका नहीं है। तो, ये कुछ ऐसी चीज़ें हैं जो नव-रूढ़िवाद की विशेषता बताती हैं और यह क्या लाएगी।

तो, यह नव-रूढ़िवाद की पृष्ठभूमि है। तो, सबसे पहले, क्या पृष्ठभूमि के बारे में कुछ है? इस बारे में कुछ कि ये लोग कहाँ से आ रहे हैं, वे जो कर रहे हैं वह क्यों कर रहे हैं, और जो वे कर रहे हैं उसके परिणाम क्या हैं? हम बाद में इस बारे में और अधिक देखेंगे। नव-रूढ़िवाद, नव-रूढ़िवाद

के बारे में कुछ भी, एक आंदोलन के रूप में? तो, हमने पाठ्यक्रम में बहुत सारे आंदोलन देखे हैं, और अब हम यहाँ एक और आंदोलन को सामने आते हुए देख रहे हैं।

ठीक है, आप कार्ल बार्थ के महत्व के बारे में बात किए बिना नव-रूढ़िवाद के बारे में बात नहीं कर सकते। तो, यह पृष्ठ 16 पर आपके आउटलाइन पर बी है, कार्ल बार्थ का महत्व। अगर हम बार्थ को नहीं समझते हैं, तो हम यह नहीं समझ पाएंगे कि नव-रूढ़िवादी धर्मशास्त्री यहाँ क्या प्रस्तुत कर रहे हैं।

ठीक है, कार्ल बार्थ का महत्व, वैसे, यह बार्थ है और बार्थ नहीं। ठीक है, आपका दिल धन्य हो। बहुत-बहुत धन्यवाद। तो, अगर आप कार्ल बार्थ के बारे में मुझसे कुछ पूछना चाहते हैं, तो कहें, मैं आपसे कार्ल बार्थ के बारे में एक सवाल पूछना चाहता हूँ, लेकिन बार्थ के बारे में नहीं, जैसा कि मैं अक्सर सुनता हूँ।

तो, यह बार्थ है, यह स्पष्ट है। और वैसे, इसका किसी भी चीज़ से कोई लेना-देना नहीं है, इसलिए किसी भी तरह का संबंध बनाने की कोशिश न करें। हमारे यहाँ गॉर्डन कॉलेज में एक प्रोफेसर थे, डॉ. विलियम बीलर, और वे बेसल, स्विट्ज़रलैंड में कार्ल बार्थ के अधीन डॉक्टरेट प्राप्त करने वाले अंतिम अमेरिकी छात्र थे।

और यहाँ उन्होंने सबसे पहले बैरिंगटन में पढ़ाया, वे विलय से पहले यहाँ आए, 1981 में यहाँ आए। लेकिन उनके जीवन में प्रसिद्धि का दावा था, वे अंतिम अमेरिकी थे; वे बार्थ के अधीन डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त करने वाले अंतिम छात्र नहीं थे, लेकिन वे कार्ल बार्थ के अधीन डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त करने वाले अंतिम अमेरिकी छात्र थे। इसलिए, यह वास्तव में उनकी ओर से एक उल्लेखनीय उपलब्धि थी, इसमें कोई संदेह नहीं है।

तो, ठीक है, तो कार्ल बार्थ। हम जो करने जा रहे हैं वह उनके जीवन पर थोड़ा नज़र डालना है, ज़्यादा नहीं, बस उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत, और फिर सबसे महत्वपूर्ण बात, हम उनके धर्मशास्त्र को देखने जा रहे हैं। और उनका धर्मशास्त्र यहाँ अमेरिकी नव-रूढ़िवाद में काम आने वाला है।

तो, ठीक है, यहाँ उनके जीवन के बारे में कुछ बातें हैं। पहली बात जो हम ध्यान देना चाहते हैं वह यह है कि उनका जन्म स्विट्ज़रलैंड में हुआ था, इसलिए वे स्विस् नागरिक हैं। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य है क्योंकि यह बाद में उनके जीवन को बचाएगा, जिसके कारण हम कुछ ही मिनटों में बताएंगे।

लेकिन उनका जन्म स्विट्ज़रलैंड में हुआ था। इसलिए, कार्ल बार्थ का लालन-पालन उदार प्रोटेस्टेंट परंपरा में हुआ। वह विश्वविद्यालय गए, और विश्वविद्यालय में, प्रोटेस्टेंट उदारवाद ने जर्मन विश्वविद्यालयों पर एक तरह से कब्ज़ा कर लिया था।

तो, वह उस परंपरा में पले-बढ़े थे। वह उस चीज़ पर विश्वास करते थे। श्लेयरमाकर उनके लिए अपने अध्ययन और अन्य बातों के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण थे।

तो यही वह परंपरा है जिसमें उनका पालन-पोषण हुआ। अब, विश्वविद्यालय छोड़ने के बाद वे पादरी बन गए हैं। वे स्विटजरलैंड में पादरी बन गए, और वे प्रथम विश्व युद्ध के दौरान पादरी थे। इसलिए, उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध को देखा और प्रथम विश्व युद्ध देखा। एक पादरी के रूप में, वे प्रोटेस्टेंट उदारवाद से मेल नहीं खा सके, जिसमें उन्हें प्रथम विश्व युद्ध की वास्तविकताओं के साथ प्रशिक्षित किया गया था।

वह अपने जीवन में इन दोनों चीजों को बिल्कुल भी नहीं मिला पाया। उसने जो खोजा वह शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद था, और उसने पाया कि वह दिवालिया था। यह बाइबिल के अनुसार नहीं था।

यह 20वीं सदी के लिए सही नहीं था। तो जब वह प्रथम विश्व युद्ध के दौरान पादरी के रूप में यह महान खोज करेगा तो वह कहां जाएगा? वह कहां जाएगा? वह किसकी ओर रुख करेगा, एक तरह से, उस उदार धर्मशास्त्र का प्रतिकार करने की कोशिश करने के लिए जिसके साथ वह बड़ा हुआ है? यह उसके जीवन का अगला कदम है। वह बाइबिल की ओर मुड़ता है।

वह बाइबिल में जाता है, और बाइबिल में वह पाता है जिसे वह एक अजीब नई दुनिया कहता है। यह एक ऐसी दुनिया थी जिससे वह परिचित नहीं था, उसके शास्त्रीय उदारवादी प्रोटेस्टेंट प्रकार के प्रशिक्षण और बाइबिल की आलोचना पर जोर देने के साथ, जिसने बाइबिल को काफी हद तक अलग रखा। कार्ल बार्थ बाइबिल में जाता है, और वह इस अजीब नई दुनिया को देखता है। वह देखता है कि बाइबिल ईश्वर की अन्यता और मानवता की पापपूर्णता के बारे में बात करती है।

और वे दो सिद्धांत बन जाते हैं, हम इसे तब देखेंगे जब हम उनके धर्मशास्त्र में जाएंगे, लेकिन अन्यता, ईश्वर की श्रेष्ठता, मानवता की पापपूर्णता। बाइबिल मानवता के साथ ईश्वर की एकता के बारे में बात नहीं करती है, इसका संकेत नहीं देती है, जो शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद के सिद्धांतों में से एक था। ईश्वर मानवता के साथ एकीकृत है।

यीशु परमेश्वर के साथ एकता का एक अच्छा उदाहरण बन जाता है और इसी तरह की अन्य बातें। नहीं, बाइबिल ऐसा नहीं कहती। हो सकता है कि लोगों ने बाइबिल से यही सीखा हो, लेकिन बाइबिल ऐसा नहीं कहती।

बाइबिल ईश्वर के बारे में एक पवित्र व्यक्ति के रूप में बात करती है, और यह हमारे बारे में पापियों के रूप में बात करती है जिन्हें छुटकारे की आवश्यकता है। इसलिए अब उसे बाइबिल की इस तरह की अजीब नई दुनिया मिल गई है। अब, सवाल यह है कि वह बाइबिल की व्याख्या कैसे करेगा? वह बाइबिल की व्याख्या, निश्चित रूप से, अपने लोगों के माध्यम से करेगा, जिनके बारे में उसने प्रोटेस्टेंट उदारवाद में सुना होगा, लेकिन हो सकता है कि उसने उनके बारे में सुना हो, लेकिन हो सकता है कि उन्हें हाशिये पर रखा गया हो, लेकिन वह लूथर और कैल्विन जैसे लोगों के माध्यम से बाइबिल की व्याख्या करने जा रहा है।

तो, यह लूथर, खास तौर पर कैल्विन होगा, जिसके पास वह इस महान बाइबिल संदेश, बाइबिल की इस अजीब नई दुनिया को समझने में मदद करने के लिए जाएगा। वह सुधारकों के पास जाएगा। अब, वह कीर्कगार्ड के पास भी गया।

तो यह 19वीं सदी के डेनिश किर्केगार्ड, ईसाई अस्तित्ववाद है। किर्केगार्ड को पढ़ने और अध्ययन करने से उन्हें बहुत मदद मिली। इसलिए, उन्हें लगता है कि वे मुख्य रूप से सुधार स्रोतों से प्रभावित हैं।

ठीक है, कार्ल बार्थ के बारे में कुछ और बातें हैं। 1918 में, उन्होंने एक टिप्पणी लिखी। जब उन्होंने बाइबल की इस अजीब नई दुनिया की खोज की, तो उनमें से एक किताब जिसने उन्हें वास्तव में चौंका दिया, उनकी सांसें थम गईं, वह थी रोमियों की किताब।

और 1918 में उन्होंने फैसला किया कि वे रोमियों की किताब पर एक टिप्पणी लिखेंगे। इसे पहली बार 18 में प्रकाशित किया गया और फिर 1921 में फिर से प्रकाशित किया गया। लेकिन उन्होंने रोमियों की किताब पर एक टिप्पणी लिखी।

मुझे उस टिप्पणी के बारे में कुछ कहना है। उस टिप्पणी का उद्देश्य अन्य जर्मन पादरियों के साथ रोमनों के बारे में जो कुछ वे जानते थे उसे साझा करना था। और, आप जानते हैं, टिप्पणी का उद्देश्य अन्य, अन्य, अन्य स्विस पादरियों के साथ चर्चा का विषय बनना था।

क्या मैंने जर्मन पादरियों के बारे में कहा? दूसरे स्विस पादरियों के बारे में। बस यही मतलब था। उसे जो मिला, वह यह था कि उसे आश्चर्य हुआ कि दूसरे लोग भी इसे समझ रहे थे, और आखिरकार इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया।

और उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि रोमियों की पुस्तक पर उसकी टिप्पणी ब्लॉकबस्टर बन गई। यह न्यायपूर्ण, अविश्वसनीय बन गई। लोग इसे पढ़ रहे थे और इसका अध्ययन कर रहे थे, उसे पत्र लिख रहे थे, जहाँ वह पढ़ा रहा था वहाँ उससे मिलने आ रहे थे, इत्यादि।

यह एक अद्भुत ब्लॉकबस्टर बन गई। इसलिए, उसे पता था कि उसने कुछ खोज लिया है। रोमनों की पुस्तक तक पहुँचने की कोशिश में उसके पास कुछ था।

और ऐसा क्यों हुआ? यह ब्लॉकबस्टर क्यों था? क्योंकि प्रोटेस्टेंट उदारवाद ने बाइबल को काफी हद तक नज़रअंदाज़ कर दिया था, जिसमें रोमनों की किताब भी शामिल थी। यह ब्लॉकबस्टर इसलिए था क्योंकि यह बाइबल को समझने का एक नया तरीका था, 20वीं सदी के लिए ईश्वर के संदेश को देखने का एक नया तरीका था, एक विस्फोटक, यह एक विस्फोटक किताब थी। इसलिए बार्थ दृश्य में आते हैं।

उनका वास्तव में इस क्षेत्र में आने का कोई इरादा नहीं था, लेकिन वे वास्तव में एक उल्लेखनीय तरीके से इस क्षेत्र में आए। फिर जो हुआ वह यह था कि बार्थ ने महान विश्वविद्यालयों में पढ़ाना शुरू कर दिया, और वे जर्मनी चले गए। अब वे एक स्विस नागरिक हैं, लेकिन वे अपना शिक्षण करियर शुरू करने के लिए जर्मनी चले गए और कई अलग-अलग जर्मन विश्वविद्यालयों में पढ़ाते हैं।

और वहाँ रहते हुए, वह तय करता है कि वह हठधर्मिता लिखना शुरू करने जा रहा है। वह तय करता है कि वह एक व्यवस्थित धर्मशास्त्र लिखने जा रहा है। अब वह तय करता है कि मूल रूप से जिस चीज़ को उसने हठधर्मिता कहा था, उसे उसने ईसाई हठधर्मिता कहा था।

उन्होंने सोचा कि यही उनकी किताब का अच्छा शीर्षक है, क्रिश्चियन डोगमेटिक्स। फिर उन्होंने कहा, नहीं, यह क्रिश्चियन डोगमेटिक्स नहीं है। यह चर्च के लिए डोगमेटिक्स है।

इसलिए, उन्होंने शीर्षक को ईसाई धर्मसिद्धांतवाद से बदलकर चर्च धर्मसिद्धांतवाद कर दिया। वह 30 के दशक की शुरुआत में थे, और अब वह अपना शिक्षण करियर और शिक्षण मंत्रालय शुरू कर रहे हैं; अपने शुरुआती 30 के दशक में, उन्होंने चर्च धर्मसिद्धांतवाद लिखना शुरू कर दिया। जब 1968 में उनकी मृत्यु हुई, तब भी वह चर्च धर्मसिद्धांतवाद लिख रहे थे।

तो, चर्च हठधर्मिता एक बहु-खंड हठधर्मिता है। यहाँ आपको थोड़ा संकेत देने के लिए, सुलह पर सिद्धांत दो खंडों में है, और यह लगभग, मैं कहना चाहता हूँ, केवल एक सिद्धांत पर लगभग 1600, 1700 पृष्ठ हैं। इसलिए, कार्ल बार्थ के लेखन के माध्यम से अपना रास्ता बनाने में थोड़ा समय लगता है।

इस बारे में कोई सवाल ही नहीं है। कार्ल बार्थ के लेखन को पढ़ने के लिए कुछ समय एक जीवन भर के बराबर होगा। मुझे अपने पीएचडी कार्यक्रम के लिए सुलह पर एक कोर्स करना था, और बार्थ के दो खंड ही हमने पढ़े, वे 1800 पृष्ठ या उससे अधिक, केवल सुलह के उस एक सिद्धांत पर।

तो, कार्ल बार्थ को पढ़ने और अध्ययन करने में थोड़ा समय लगता है, लेकिन यह एक अद्भुत बात है। तो, चर्च के सिद्धांत। तो, ठीक है।

तो, वह लिख रहा है। अब, हिटलर सत्ता में आ गया है। वह जर्मनी में है।

हिटलर सत्ता में आता है। जब हिटलर सत्ता में आया, तो वह, दूसरों के साथ और उसका सबसे प्रतिभाशाली छात्र, डिट्रिच बोनहोफर नाम का एक आदमी था। जब हिटलर सत्ता में आया, तो उसने और दूसरों ने देखा कि उसे थोड़ा समय लगा, लेकिन आखिरकार, उन्होंने देखा कि ऐसा नहीं था; वह एक अ-नेता था, नेता नहीं था।

वह फ़्यूहरर नहीं थे। वह एक गैर-फ़्यूहरर थे। यह कोई सरकार नहीं थी।

यह एक गैर-सरकारी संगठन था। और वह हिटलर की आलोचना करने लगता है। वह बारमन घोषणा नामक किसी चीज़ का लेखक है।

मेरे पास यह सूची में नहीं है, लेकिन BARMEN, बारमैन घोषणा। आप इसे नोट कर लें। वह बारमैन घोषणा के लेखक हैं।

बारमन घोषणा मूल रूप से नाजी चर्च के खिलाफ आस्था की घोषणा है क्योंकि जर्मनी में चर्च नाजी बन गया था। जर्मनी में चर्च हिटलर को सलाम कर रहा था। खैर, जीवन में केवल एक ही भगवान है, और वह प्रभु यीशु मसीह है।

और इसलिए, बारमन घोषणापत्र इसे बहुत, बहुत स्पष्ट करता है। ठीक है, अब, अगर वह स्विस नागरिक या जर्मन नागरिक नहीं होता, तो शायद उसका अंत बोनहोफ़र जैसा होता। बोनहोफ़र को जेल में जाना पड़ा और फिर बोनहोफ़र को फांसी दे दी गई।

दरअसल, कल यानी 5 अप्रैल को ही बोनहोफ़र को जेल ले जाया गया था। और फिर 5 अप्रैल 43 को उनकी मृत्यु हो गई। 9 अप्रैल 45 को उन्हें फांसी पर लटका दिया गया।

अगर बार्थ जर्मन नागरिक होते, तो उनका भी वही हश्र होता जो बोनहोफ़र का हुआ। लेकिन चूँकि वे स्विस नागरिक थे, इसलिए उन्हें देश से बाहर जाने दिया गया। वे स्विटजरलैंड वापस जा पाए।

और जब वे स्विटजरलैंड वापस गए, तो उनके धर्मशास्त्र पर चर्चा करने से पहले हम उनके बारे में जो आखिरी बात कहेंगे, वह यह है कि जब वे स्विटजरलैंड वापस गए, तो उन्होंने अपना बाकी जीवन बेसल में अध्यापन करते हुए बिताया। और यही बेसल है। उन्होंने अपना बाकी जीवन बेसल में, बेसल विश्वविद्यालय में बिताया।

यहीं से हमारे दोस्त ने कार्ल बार्थ के अधीन अपनी डिग्री प्राप्त की। और वैसे, यह बेसल है, बेसल नहीं। इसलिए कृपया बेसल से कार्ल बार्थ न कहें।

आप जानते हैं, यह बेसल है। इसलिए, वह वापस चले गए और अपने जीवन के बाकी समय बेसल में पढ़ाया। इसलिए जब युद्ध शुरू हुआ, तो वह एक सुरक्षित, तटस्थ देश में थे।

लेकिन वह बार्थ है। और यही वह है, वह इस तरह का व्यक्ति था। आप ऐसा नहीं कर सकते थे, और उसे दूसरा ऑगस्टीन कहा जाता है।

और उन्हें दूसरा ऑगस्टीन इसलिए कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने अपने धर्मशास्त्र के ज़रिए दुनिया पर जो प्रभाव डाला, ठीक वैसे ही जैसे ऑगस्टीन ने अपनी दुनिया में किया था। तो, एक बहुत ही उल्लेखनीय व्यक्ति। ठीक है, तो यह कार्ल बार्थ है।

यह उनके जीवन के बारे में बस थोड़ा सा है, ताकि हम उनके धर्मशास्त्र को देखने से पहले यह समझ सकें कि वे कौन थे। अब, किसी कारण से, यह वहाँ नहीं आ रहा है। क्या यह आया? ठीक है, यह वहाँ है, 1886, 1968।

यह रहा। और वह यहाँ है। आप जानते हैं, मैं इस तस्वीर के बारे में भी कुछ कहना चाहता हूँ।

अगर आप इस तस्वीर को देखें, टाइम मैगज़ीन, अगर आप इस तस्वीर को बहुत ध्यान से देखें, कार्ल बार्थ, तो आपको उसके पीछे कुछ नज़र आएगा। अब, यह टाइम मैगज़ीन है। यह एक अमेरिकी तरह का उत्पाद है।

लेकिन आप उसके पीछे कुछ देखेंगे, और वह एक खाली कब्र है। यह पुनर्जीवित मसीह है। अब, टाइम मैगज़ीन ने भी माना है कि कार्ल बार्थ के धर्मशास्त्र के केंद्र का एक हिस्सा यीशु का पुनरुत्थान था।

यहां तक कि उनमें भी ऐसा करने की समझ थी। लेकिन यहां मैं यह भी कहना चाहता हूं, और आप देखेंगे, हम कुछ ही मिनटों में नीबूर के बारे में भी बात करने जा रहे हैं, लेकिन यहां मैं कार्ल बार्थ के बारे में कहना चाहता हूं। कार्ल बार्थ को एक सार्वजनिक धर्मशास्त्री के रूप में मान्यता प्राप्त थी।

उन्हें पहचाना गया, टाइम मैगज़ीन के कवर पर रखा गया, उन्हें एक सार्वजनिक धर्मशास्त्री के रूप में पहचाना गया। दूसरे शब्दों में, 40, 50, 60 के दशक अभी भी एक ऐसा समय था जब धर्मशास्त्री का अपनी संस्कृति पर प्रभाव था। मुझे नहीं लगता कि हम आज अमेरिकी जीवन और संस्कृति में उस समय में रह रहे हैं, जहाँ आपके पास सार्वजनिक धर्मशास्त्री हैं।

शायद हम इसके सबसे करीब पोप फ्रांसिस की हालिया यात्रा के बाद आए हैं। पोप फ्रांसिस के अमेरिका आने से धर्मशास्त्री, पादरी, मंत्री, रोमन कैथोलिक चर्च के प्रमुख आदि के रूप में अमेरिकी जीवन पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा। लेकिन हम जिसे सार्वजनिक धर्मशास्त्री के रूप में पहचानते थे, उसके सबसे करीब हम यहीं आए हैं।

तो, वह है, कार्ल बार्थ, एक बहुत ही उल्लेखनीय व्यक्ति। यहाँ बार्थ के बारे में, उनके जीवन के बारे में कुछ भी? हो सकता है कि आपने अन्य पाठ्यक्रमों में बार्थ के बारे में बात की हो, इसलिए हो सकता है कि यह कुछ ऐसा हो जिसके बारे में आपने पहले ही बात की हो, लेकिन यह बहुत प्रभावशाली है। आइए नंबर दो पर चलते हैं, उनके धर्मशास्त्र, क्योंकि यह बार्थ का धर्मशास्त्र है जो उन अन्य लोगों को प्रभावित करने वाला है जिनके बारे में हम बात करते हैं, और इस आंदोलन को नव-रूढ़िवादी कहा जाता है।

तो, चलिए उनके धर्मशास्त्र के बारे में बात करते हैं। मुझे उनके धर्मशास्त्र के बारे में पाँच बातें पता हैं जो नव-रूढ़िवाद को आकार देने के लिए महत्वपूर्ण हैं। पहली बात यह है कि हम बाइबल को ईश्वर का वचन मानकर उसके प्रति गंभीरता या प्रतिबद्धता को क्या कहेंगे।

तो, बाइबल परमेश्वर का वचन है। बाइबल, परमेश्वर के वचन के रूप में, हमें मुख्य रूप से मसीह के बारे में परमेश्वर के वचन के रूप में बताती है। तो, बाइबल परमेश्वर का वचन है और मसीह के बारे में परमेश्वर के वचन के रूप में बताती है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

अब, इस पहले के साथ, परमेश्वर के वचन की नई गंभीरता, परमेश्वर का वचन, वह जो करता है, वह एक अर्थ में, उस वचन को समायोजित करने के किसी भी प्रयास, परमेश्वर के वचन को नियंत्रित करने के किसी भी प्रयास, परमेश्वर के वचन को वश में करने के किसी भी प्रयास पर

हमला करता है, उसका पीछा करता है, उसे चुनौती देता है। इसलिए, वह एक धर्मशास्त्री है। वह उन लोगों के पीछे जाने वाला है जो गलत हैं।

तो, इस पहले बिंदु के अंतर्गत, परमेश्वर के वचन के बारे में एक नई गंभीरता, लोगों के तीन बुनियादी समूह हैं जिनके पीछे वह जाता है क्योंकि वे परमेश्वर के वचन को नहीं समझते हैं या वे इसे इस तरह समझते हैं कि यह परमेश्वर के वचन से अलग हो जाता है। तो, वह तीन समूहों के पीछे जाता है। नंबर एक, वह उन विद्वानों के पीछे जाता है जो परमेश्वर के वचन को सिर्फ रहस्य मानते हैं जिन्हें सुलझाया जाना है।

बाइबल, चलो बाइबल खोलें। मैं एक विद्वान हूँ। बाइबल में रहस्य हैं जिन्हें सुलझाया जाना है, और मैं उन रहस्यों को खोजकर उनका पता लगाने जा रहा हूँ।

ऐसा करना मेरा काम है। उसे यह पसंद नहीं है क्योंकि ऐसा करना ऐसा है जैसे आप बाइबल को नियंत्रित कर रहे हैं। ऐसा है जैसे आप परमेश्वर के वचन को नियंत्रित कर रहे हैं।

तो, वह इस बात से बिल्कुल भी खुश नहीं है। परमेश्वर का वचन रहस्यों की एक श्रृंखला नहीं है जिसे खोजा जाना है। तो ठीक है, यह नंबर एक है।

नंबर दो, वह उदारवादी, शास्त्रीय उदारवादी विद्वानों और शास्त्रीय उदारवादी प्रोटेस्टेंटों के पीछे जाता है। वह प्रोटेस्टेंट उदारवाद के पीछे जाता है क्योंकि प्रोटेस्टेंट उदारवाद ने ईश्वर के वचन को लिया और इसे मध्यम वर्ग के लिए एक विचारधारा बना दिया। शास्त्रीय प्रोटेस्टेंट उदारवाद के लिए, यीशु किसी भी तरह की भविष्यवाणी के बिना, किसी भी तरह के पुजारी के कार्य के बिना, किसी भी तरह की राजसी भूमिका के बिना एक शांत मध्यम वर्ग के व्यक्ति बन गए।

इसलिए, यीशु इन लोगों के लिए एक बहुत ही शांत मध्यवर्गीय लोग बन गए हैं। वे उन लोगों से बहुत नाखुश हैं जो बाइबल का इस्तेमाल करके अपनी खुद की मध्यवर्गीय विचारधारा विकसित करते हैं। बाइबल का उद्देश्य ऐसा नहीं है।

यह बाइबल को वश में करना है। यह बाइबल पर एक तरह का नियंत्रण है। यह बुरी खबर है।

ठीक है, वह तीसरे समूह के पीछे जाता है। तीसरा समूह जिसके पीछे वह जाता है, आपको इस बात से आश्चर्य नहीं होगा, लेकिन तीसरा समूह सामाजिक सुसमाचार प्रचारक है। वह सामाजिक सुसमाचार प्रचारकों के पीछे जाता है।

अब, वह रौशनबुश के पीछे नहीं जाता, बल्कि वह सामाजिक सुसमाचार के दूसरे और तीसरे पीढ़ी के लोगों के पीछे जाता है क्योंकि उन्होंने बाइबल को सिर्फ एक नैतिक किताब बना दिया है कि कैसे इस दुनिया की गलतियों को सुधारा जाए, कैसे सामाजिक पुनर्निर्माण किया जाए, कैसे दुनिया को सुधारा जाए। इसलिए, उन्होंने इसे सिर्फ एक नैतिक पाठ बना दिया है। उन्होंने बाकी सब कुछ भूल दिया है जो बाइबल में ईश्वर और मनुष्य के बारे में कहा गया है, ईश्वर की अन्यता और मनुष्य की पापपूर्णता, इत्यादि।

नहीं, यह एक नैतिक पुस्तक है। आइए जानें कि बाइबल पढ़कर हम दुनिया को कैसे बेहतर बना सकते हैं। वह इस बात से बहुत दुखी है क्योंकि यह परमेश्वर का वचन नहीं है।

जब आपने ऐसा किया है तो आपने परमेश्वर के वचन को अपने वश में कर लिया है। जब आपने ऐसा किया है तो आपने परमेश्वर के वचन को नियंत्रित कर लिया है। इसलिए, कार्ल बार्थ के लिए पहली बात यह भी सच होगी कि हम अन्य नए रूढ़िवादी लोगों के लिए भी आगे बढ़ेंगे, लेकिन कार्ल बार्थ के लिए पहली बात परमेश्वर के वचन के बारे में एक नई गंभीरता होगी।

आइए हम परमेश्वर के वचन के बारे में गंभीरता से सोचें। आइए हम समझें कि यह क्या था। परमेश्वर हमसे अपने स्थान से बात कर रहा है, हमारे स्थान से नहीं।

तो यह नंबर एक है। मुझे दूसरा काम करने दीजिए, और फिर मैं आपको एक ब्रेक दूंगा। तो, दूसरा काम पहले काम के बाद आसानी से हो जाता है।

दूसरा यह है कि ईश्वर कौन है, इस बारे में नई गंभीरता है क्योंकि ईश्वर ही ब्रह्मांड का सर्वोच्च निर्माता और प्रभु है। ईश्वर वही है। इसलिए, ईश्वर कौन है, इस बारे में नई गंभीरता है।

इसलिए, अनुवाद के आधार पर, यह शब्दों का खेल हो सकता है। ईश्वर पूरी तरह से अलग है, और आप इसे अंग्रेजी में WHOLLY लिख सकते हैं। ईश्वर पूरी तरह से या पूरी तरह से अलग है।

या फिर आप कह सकते हैं कि ईश्वर पूरी तरह से अलग है, पवित्र है। पूरी तरह से अलग है। और ये दोनों बातें बार्थ के लिए सच होंगी।

वह पूरी तरह से अलग है, पूरी तरह से, पूरी तरह से अलग। पूरी तरह से अलग। और वह पूरी तरह से अलग है, पवित्र, अलग।

वह उस तरह से पवित्र है जिस तरह से हम नहीं हैं। वह अपनी पवित्रता में हमसे अलग है। इसलिए, परमेश्वर की संप्रभुता, परमेश्वर की महिमा, परमेश्वर की महिमा, और उदार प्रोटेस्टेंटवाद ने जो किया, उसने परमेश्वर को भी वश में कर लिया।

तो, उदारवादी प्रोटेस्टेंटवाद के लिए, भगवान हमारे अच्छे दोस्त बन गए थे। भगवान मेरे दोस्त बन गए थे। भगवान बन गए थे, वैसे आप इसे रेडियो, टेलीविज़न पर हमेशा सुनते हैं, भगवान ऊपर वाला आदमी बन गए थे, आप जानते हैं।

तो, बार्थ ने कहा, यही आप ईश्वर के बारे में सोचते हैं। आप ईश्वर के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। जब आप ईश्वर के बारे में इस तरह से बात कर रहे हैं तो आप बाइबल में वर्णित ईश्वर के बारे में बात नहीं कर रहे हैं।

तो, ईश्वर की संप्रभुता के बारे में नई गंभीरता है। तो, ठीक है, यह नंबर दो है। मैं आपको यहाँ पाँच सेकंड देता हूँ।

बस इतना ही। नई गंभीरता, नंबर तीन। कार्ल बार्थ से तीसरी बात जो हमने सीखी:

उनके धर्मशास्त्र से तीसरी बात जिसने यहाँ पर प्रभाव डाला। तीसरी बात। परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में एक नई गंभीरता और हम प्रकाशितवाक्य में परमेश्वर के अनुग्रह को कैसे देखते हैं।

तो यह बार्थ के लिए तीसरा नंबर है। एक नई गंभीरता। ईश्वर की कृपा को गंभीरता से लें।

हमें इस बात को गंभीरता से लेना चाहिए कि हम कैसे समझते हैं कि वह अनुग्रह हमारे लिए कैसे प्रकट हुआ है या प्रकट हुआ है। ठीक है, तो वह शब्द जो कार्ल बार्थ को पसंद नहीं है, वह है धर्म, उद्घरण-अनउद्घरण, धर्म। ईसाई धर्म कोई धर्म नहीं है।

अब, वह इस शब्द को पसंद नहीं करता है क्योंकि वह धर्म को मानव जाति के रूप में देखता है, मनुष्य का ईश्वर तक पहुँचने का तरीका। वह धर्म को इसी तरह देखता है। वह विश्व धर्मों को भी इसी तरह देखता है।

लेकिन हम ईश्वर तक पहुँचने के लिए काम कर रहे हैं, या हम जो कुछ भी कर रहे हैं, उसके ज़रिए ईश्वर तक पहुँचने के लिए काम कर रहे हैं, चाहे हम धार्मिक हों या कुछ और। हम ईश्वर या देवताओं को प्रसन्न करने की कोशिश कर रहे हैं। बार्थ के लिए यही धर्म है।

ईसाई धर्म कोई धर्म नहीं है। ईसाई धर्म ईश्वर की कृपा से हमारे सामने प्रकट हुआ मसीह का शरीर है। इसलिए, ईसाई धर्म विश्वासियों का समुदाय है जो ईश्वर की कृपा से हमारे जीवन में आया है और ईश्वर की कृपा से बना है।

ईसाई धर्म कोई ऐसा धर्म नहीं है जिसे हम आकार देते हैं। यह कोई ऐसा धर्म नहीं है जिसे हम बनाते हैं। यह कोई ऐसा धर्म नहीं है जिसे हम एक साथ जोड़ते हैं।

ईसाई धर्म हमारे लिए ईश्वर की कृपा से बना और आकार लिया गया है। हम यह इसलिए जानते हैं क्योंकि ईश्वर ने खुद को हमारे सामने प्रकट किया है। उन्होंने खुद को हमारे सामने सबसे महान रहस्योद्घाटन के रूप में दिखाया है, और सबसे महान रहस्योद्घाटन, निश्चित रूप से, यीशु मसीह में है।

तो, देहधारी परमेश्वर, मसीह में परमेश्वर, इसी तरह हम उस अनुग्रह को समझते हैं जो हमें प्रकट किया गया है। तो, यीशु के चेहरे को देखो। इसी तरह आप परमेश्वर को जान पाएँगे क्योंकि इसी तरह परमेश्वर ने खुद को हमारे सामने प्रकट करने का चुनाव किया है।

तो यह बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। अब, मैंने इसका उल्लेख किया है। यदि आप में से कोई भी ईसाई धर्मशास्त्र के लिए मेरा अनुसरण करता है, तो आप इसे जानते होंगे, लेकिन जॉन 1.14। आप उस श्लोक को लिखना चाहते हैं।

यूहन्ना 1.14. आप इसे अवश्य ही लिख लेना चाहेंगे। ठीक है। शब्द देहधारी हुआ और हमारे बीच में डेरा किया और हमने उसकी महिमा देखी।

महिमा पिता की एकलौती संतान है, जो अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण है। लेकिन शब्द देहधारी हुआ। परमेश्वर देहधारी हुआ।

तो परमेश्वर ने खुद को हमारे सामने कैसे प्रकट किया है? उसने अपना अनुग्रह कैसे प्रकट किया है? उसने यीशु मसीह के व्यक्तित्व में खुद आकर अपना अनुग्रह प्रकट किया है। ठीक है। तो, कार्ल बार्थ के पास उस श्लोक के लिए एक शब्द था।

कार्ल बार्थ ने उस आयत को संक्षेप में धर्मशास्त्र कहा। संक्षेप में धर्मशास्त्र यही है। बार्थ ने कहा कि जॉन 1.14 बाइबल है।

बाकी सब कुछ यूहन्ना 1:14 पर टिप्पणी है। इसलिए, अगर आपके पास यूहन्ना 1:14 है तो आपके पास बाइबल है। आपके पास शास्त्रों का हृदय है। आपके पास अवतार है।

बाइबल में बाकी सब कुछ यूहन्ना 1:14 की ओर इशारा करता है, जो परमेश्वर के देहधारी होने की महान अवतार घटना है। इसलिए, क्राइस्टोलॉजी का पूरा मामला और मसीह हमारे लिए कौन है, बहुत महत्वपूर्ण हो गया है। नंबर चार।

चौथा, एक नई गंभीरता। हम पहले ही इस बारे में बता चुके हैं, लेकिन पापी के रूप में मनुष्य के बारे में एक नई गंभीरता। हम सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण पापी हैं।

हम सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण रूप से परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह कर रहे हैं। और अगर हम इसे स्वीकार नहीं करते हैं, तो हम अपने बारे में जितना सोचना चाहिए उससे ज़्यादा सोचेंगे। क्योंकि पवित्र परमेश्वर के विपरीत, हम यहाँ विद्रोह कर रहे हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है। तो, एक नई गंभीरता। हमारे पाप के बारे में एक नई गंभीरता और कैसे परमेश्वर हमारे ऊपर खड़ा है और हमारा न्याय करता है।

परमेश्वर हमारे पापों का न्यायकर्ता है। संभवतः बार्थ के लिए, परमेश्वर को जानने का पहला तरीका यह है कि उसे अपने पापों के न्यायकर्ता के रूप में जानें। लेकिन निश्चित रूप से, उसने मसीह के आगमन और यूहन्ना 1.14 इत्यादि के द्वारा उस पाप से बाहर निकलने का एक तरीका प्रदान किया है।

तो, इस चौथे बिंदु के अंतर्गत, क्या मेरे पास ईसाई धर्मशास्त्र की कक्षा के लिए कोई था? मेरे पास ईसाई धर्मशास्त्र के लिए कुछ लोग थे। ईसाई धर्मशास्त्र में, हम जॉन कैल्विन से बहुत कुछ उद्धृत करते थे, जिन्हें बार्थ अच्छी तरह से जानते थे। व्यक्तिगत रूप से नहीं, लेकिन बार्थ जॉन कैल्विन को अच्छी तरह से जानते थे।

कैल्विन के संस्थानों की शुरूआती पंक्ति अब मैं धर्मशास्त्र वर्ग से किसी को भी नहीं चुनूंगा, लेकिन कैल्विन के संस्थानों की शुरूआती पंक्ति यह थी कि हमारे पास जो भी ज्ञान है, यानी सच्चा और ठोस ज्ञान, वह ईश्वर और खुद के ज्ञान से शुरू होता है। लेकिन कौन पहले आता है, यह

समझना आसान नहीं है। लेकिन कैल्विन ने सिखाया कि ईश्वर को जानना और खुद को जानना एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

लेकिन कैल्विन ने जो पहली बात कही, पहली बात जो आपको अपने बारे में पता है, वह यह है कि आप ईश्वर के खिलाफ विद्रोह करने वाले पापी हैं। अब बार्थ ने इसे उठाया और कहा कि पहली बात जो आपको अपने बारे में पता है वह यह है कि आप अपने पाप से सीमित हैं और आपको मुक्ति की आवश्यकता है। आप इसे स्वयं नहीं कर सकते, और ईश्वर मसीह में इसे करने जा रहा है।

लेकिन यह पहली बात है जो आप अपने बारे में जानते हैं। अब, मैं बस इतना ही कहूंगा, लेकिन क्या यह उस संस्कृति के लिए एक प्रति-सांस्कृतिक संदेश है जिसमें हम रहते हैं? इसका उत्तर हाँ है। अगर यह एक सच्चा और झूठा सवाल होता, तो इसका उत्तर हाँ, सच्चा होता।

यह एक प्रति-सांस्कृतिक संदेश है क्योंकि जिस दुनिया में हम रहते हैं वह मनुष्यों के बारे में बात नहीं करना चाहती है कि वे पापी हैं और ईश्वर के खिलाफ विद्रोह कर रहे हैं और उन्हें मोक्ष की आवश्यकता है। मैं ठीक हूँ, और आप ठीक हैं, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। तो अब मुझे लगता है कि बार्थ से सीधे पापी के रूप में मनुष्यों पर एक लंबा उपदेश आ रहा है।

लेकिन यह है, नंबर चार। ठीक है, और फिर नंबर पांच। नंबर पांच यह है कि हमें ईश्वर को समझने के तरीके में गंभीरता की एक नई भावना रखनी होगी।

हमें ईश्वर को समझने के तरीके में एक नई गंभीरता की आवश्यकता है। क्योंकि उदारवादी प्रोटेस्टेंटवाद को लगा कि वे किसी तरह अपने दिमाग से, अपनी विद्वत्ता से, अपनी शिक्षाओं से ईश्वर को समझ सकते हैं, इसलिए उन्हें लगा कि अगर आपके पास सही अवधारणाएँ हैं, अगर आपके पास सही विचार हैं, अगर आपके पास ईश्वर के बारे में सही विचार हैं, सही दर्शन है, तो आप ईश्वर को जान जाएँगे।

आप निश्चित रूप से ऐसा करने में सक्षम होंगे। बार्थ ने कहा कि आप ऐसा नहीं कर सकते। आप इस तरह की अवधारणाओं और अन्य बातों से खुद से शुरू करके यह भी नहीं समझ सकते कि ईश्वर कौन है।

इसलिए, परमेश्वर को जानने के हमारे प्रयास के बारे में एक नई गंभीरता। हम परमेश्वर को कैसे जानते हैं? हम परमेश्वर को केवल इसलिए जानते हैं क्योंकि वह हमसे बात करता है। केवल इसलिए क्योंकि वह हमसे बात करता है।

सिर्फ इसलिए क्योंकि उसने खुद को हमारे सामने प्रकट किया है। सिर्फ इसलिए क्योंकि उसने खुद को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। और फिर वह क्या मांगता है? वह उस पर प्रतिक्रिया मांगता है।

तो यह एक तरह से द्वंद्वात्मक है। ईश्वर हमारे पास आता है, और हम ईश्वर को जवाब देते हैं। और जितना अधिक हम ईश्वर को जवाब देते हैं, उतना ही अधिक वह खुद को हमारे सामने प्रकट करता है, और इसी तरह।

यहाँ एक तरह का संवाद चल रहा है। इसलिए, लोगों द्वारा ईश्वर को समझने के प्रयास के बारे में एक नई गंभीरता। ये पाँच बातें हैं जो इस आंदोलन को बार्थ से अलग करती हैं जिसे नियो-ऑर्थोडॉक्सी कहा जाता है।

तो, अगर आप अपनी सूची देखें, तो क्या उन पाँच चीज़ों के बारे में कोई सवाल है? उन पाँच क्षेत्रों के बारे में। बार्थ एक सुधारित संप्रदाय का हिस्सा था। वह कैल्विन को अच्छी तरह से जानता था और कैल्विन की अच्छी तरह से व्याख्या करता था, लेकिन वह स्विट्ज़रलैंड में एक सुधारित संप्रदाय का हिस्सा था।

तो, वह संप्रदाय से बंधा हुआ था, संप्रदाय से जुड़ा हुआ था। वह सच में है। मरने से पहले वह एक तरह से विश्व धर्मशास्त्री था।

वह यहूदी धर्म, विश्व धर्मों और ईसाई धर्म को धर्म के रूप में संबोधित करते हैं। उन्हें धर्म पसंद नहीं है। अगर धर्म मानव जाति के लिए ईश्वर तक पहुँचने और ईश्वर को जानने और ईश्वर को प्रसन्न करने का एक तरीका है, तो यही धर्म है।

बार्थ को इससे कोई लेना-देना नहीं है। ईसाई धर्म इसलिए नहीं बना क्योंकि हमने इसे बनाया है। चर्च का निर्माण हम नहीं कर रहे हैं।

ईसाई धर्म का निर्माण इसलिए हुआ क्योंकि परमेश्वर ने मसीह में जो प्रकट किया है। इसलिए, अब, बार्थ ने कभी-कभी बार्थ विद्वानों के बीच इस बारे में लंबी चर्चा की है, इसलिए हम शायद इसे बार्थ विद्वानों पर छोड़ देंगे। लेकिन कई बार, बार्थ पर सार्वभौमिक होने का आरोप लगाया गया था, जिसे वह मानते हैं; हम कल बोनहोफ़र सेमिनार में इस बारे में बात कर रहे थे; आदम में, सभी ने मसीह में पाप किया है।

सभी को जीवित किया जाएगा। तो, ऐसी ही चीज़ें। तो, बार्थ, वे बार्थ पर इस पर दबाव डालते रहे और वह नहीं मानता, वह कुछ हद तक नहीं मानता, वह कभी-कभी पीछे हट जाता है।

एक बार उन्होंने कहा कि मैं एक सार्वभौमिक व्यक्ति हूँ जिसका छोटा सा अक्षर यू है। मुझे नहीं पता कि इसका वास्तव में क्या मतलब है। खैर, इसका मतलब यह है कि उन्हें एहसास हुआ कि मनुष्य के पास अभी भी ना कहने की आज़ादी है, अभी भी ईश्वर को ना कहने की आज़ादी है, और हमेशा ईश्वर को ना कहने की आज़ादी है। इसलिए, मुझे यकीन नहीं है।

लेकिन यह चर्चा विश्व धर्मों और यहूदी धर्म आदि के संदर्भ में हुई। क्या ईश्वर सभी लोगों को मुक्ति देगा चाहे वे ईसाई हों या नहीं? ईसाई मार्ग पर हों या नहीं? हाँ, अलेक्जेंडर? नहीं, वह लगभग 11 साल तक पादरी के रूप में सेवा करता रहा। और फिर वह पूर्णकालिक शिक्षण में लग गया।

अब, उन्होंने अपना सारा जीवन प्रचार में बिताया। और, उनके प्रचार के लिए सबसे पसंदीदा जगहों में से एक स्थानीय जेल थी। उन्हें स्थानीय जेल में जाकर कैदियों को उपदेश देना पसंद था।

और संदेश, बेशक, यह एक तरह से बार्थियन की तरह है, लेकिन फिर से हम कल बोनहोफर में इस बारे में बात कर रहे थे, लेकिन संदेश यह था कि ईश्वर ने पहले ही आपको छुड़ा लिया है। ईश्वर आपको छुड़ाने के लिए मसीह के रूप में पहले ही आ चुके हैं। मैं आपको यह खुशखबरी देने के लिए यहाँ हूँ।

तो इस तरह से उन्होंने प्रचार किया क्योंकि उन्हें लगा कि सुसमाचार का जोर इसी पर है। तो हाँ, उन्होंने बहुत प्रचार किया, लेकिन पूर्णकालिक शिक्षण में जाने के बाद उनके पास पादरी मंत्रालय नहीं था। हाँ।

हाँ। सबसे पहले, दूसरे प्रश्न का उत्तर देते हुए, उन्होंने एक परिवार बनाया। उनके बेटे, मार्कस बार्थ, एक बहुत प्रसिद्ध न्यू टेस्टामेंट विद्वान बन गए और वास्तव में यहाँ अमेरिका में पढ़ाया।

मुझे लगता है कि यह पिट्सबर्ग में था, लेकिन मुझे यकीन नहीं है। लेकिन मार्कस बार्थ एक न्यू टेस्टामेंट विद्वान बन गए। और इसलिए यह पहला है, परिवार।

वह बहुभाषी थे। मेरे मित्र बिल बीलर, जिन्हें हम दोनों जानते हैं, लेकिन मेरे मित्र बिल बीलर सेमिनार में जाते थे, और अक्सर, सेमिनार फ्रेंच, जर्मन और अंग्रेजी में एक साथ आयोजित किए जाते थे ताकि वहाँ मौजूद हर कोई समझ सके कि क्या हो रहा है। इसलिए, वह बहुभाषी थे।

हाँ। वह निश्चित रूप से दूसरे ऑगस्टीन थे, इसमें कोई संदेह नहीं है। हालाँकि, मैं कहूँगा कि आप में से कुछ लोग यह पहले से ही जानते होंगे, लेकिन अगर आप उस यूरोपीय संस्कृति में पले-बढ़े हैं, तो आप वैसे भी बहुभाषी होंगे।

आप जर्मन, फ्रेंच और अंग्रेजी, शायद इतालवी, शायद थोड़ी स्पेनिश भाषा जानते होंगे। मेरा मतलब है, यही दुनिया है। यूरोप में वे भाग्यशाली लोग बहुभाषी दुनिया में पले-बढ़े हैं।

तो, वह बहुभाषी थे। हाँ। बार्थ के बारे में एक और बात, बार्थ एक आकर्षक व्यक्ति हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है, लेकिन हाँ।

ठीक है। नहीं, उनका परिवार नाममात्र ईसाई था। वह बोनहोफर की तरह है।

बोनहोफर का पालन-पोषण भी नाममात्र ईसाई लूथरन घर में हुआ था। बार्थ का पालन-पोषण नाममात्र ईसाई सुधारवादी घर में हुआ था। इसलिए, जब वे विश्वविद्यालय गए, तो उन्होंने धर्मशास्त्र के बारे में नहीं सोचा कि इसका बाइबल और चर्च के इतिहास से क्या लेना-देना है।

यह उदार धर्मशास्त्र था। इसलिए, उनका पालन-पोषण अधिक उदार परंपरा में हुआ था, जैसे बोनहोफर का भी था। लेकिन बार्थ ने यह खोज तब की जब वह बाइबल के पादरी थे।

बोनहोफ़र ने भी यही खोज की थी जब वह 13 या 14 साल का था, उसने बाइबल की खोज शुरू की, और फिर अपने परिवार से कहा, मैं एक धर्मशास्त्री बनना चाहता हूँ। तो, वे बहुत समान रास्ते थे। और फिर बोनहोफ़र बार्थ का छात्र बन गया।

तो, बोनहोफ़र एक तरह से बार्थ की दूसरी पीढ़ी के हैं, कुछ हद तक बार्थ के धर्मशास्त्र के, हालांकि उनकी मृत्यु तब हुई जब वे केवल 39 वर्ष के थे। बार्थ के बारे में कुछ और। मुझे कार्ल बार्थ के बारे में बात करना बहुत पसंद है।

वह एक बहुत ही आकर्षक व्यक्ति हैं। यह एक अच्छा सवाल है। बार्थ बहुत प्रभावशाली थे, अत्यंत प्रभावशाली, और इवेंजेलिकल्स, अमेरिकी इवेंजेलिकल्स के बीच सबसे ज़्यादा प्रभावशाली।

हमारे मित्र जो वहाँ गए थे, उन्होंने कैलिफोर्निया में अपना फार्मसी व्यवसाय बेच दिया और अपनी पत्नी और छह बच्चों को कार्ल बार्थ के अधीन अध्ययन करने के लिए बेसल ले गए - जीवन में कोई आसान काम नहीं। लेकिन बहुत से इंजीलवादी थे जो बेसल में बार्थ के अधीन अध्ययन करने के लिए अपना रास्ता खोज पाए।

और क्यों? क्योंकि इंजीलवादी बाइबल को गंभीरता से लेते हैं। और इंजीलवादी किसी भी धर्मशास्त्री की बात सुनेंगे जो बाइबल को गंभीरता से लेता है। और भले ही वे उसके धर्मशास्त्र की कुछ बारीकियों से असहमत हों, जो कि वे थे, उन्होंने उसमें एक तरह की बौद्धिक शक्ति पाई जिसकी उन्हें तलाश थी और जो कट्टरवाद में नहीं मिल पाई थी और जब तक इंजीलवाद स्थापित नहीं हो गया तब तक नहीं मिल पाई थी।

तो, हम जिन लोगों के बारे में बात करने जा रहे हैं, उनमें से बहुत से लोग बासेल में बार्थ के छात्र थे। उनमें से कुछ, जब बार्थ अमेरिका आए थे, तब भी उन्हें बार्थ के साथ पैनल में शामिल होने के लिए कहा गया था क्योंकि वे इस अर्थ में एक ही भाषा बोलते हैं कि हम इस बात के बारे में वास्तव में गंभीर हैं कि बाइबल ईश्वर का वचन है और मसीह और पुनरुत्थान आदि में खुद को प्रकट करता है। तो हाँ, बार्थ के साथ बहुत सारे संबंध हैं।

तो, मैं कहूँगा कि बार्थ अभी भी प्रभावशाली हैं। महिलाओं और विकलांग महिलाओं के बारे में उनके क्या विचार थे? ठीक है। उन्होंने वास्तव में ऐसा नहीं किया। यह वास्तव में ऐसा विषय नहीं है जो उनकी अपनी संस्कृति में आया हो, और इसलिए यह उनके अपने सिद्धांतों में भी है।

अब, पुरुषों और महिलाओं के संदर्भ में, पूरा मानव परिवार, एक तरह से, ईश्वर की कृपा का प्राप्तकर्ता है। इसलिए, उन्होंने कभी कोई भेदभाव नहीं किया। लेकिन क्योंकि यह उनके लिए सांस्कृतिक मामला नहीं था, और मुझे यकीन नहीं है कि जब वे अमेरिका आए थे, तब भी वे कभी सांस्कृतिक थे, मुझे यकीन नहीं है। उनसे इस बारे में सवाल किए गए होंगे, लेकिन मुझे यकीन नहीं है।

लेकिन आप बार्थ में ऐसा नहीं पाते, क्योंकि यह उनके संदर्भ के दायरे में नहीं था, जैसे कि, उदाहरण के लिए, इंग्लैंड में फिनी या वेस्ले के साथ था। बार्थ के बारे में कुछ और। बार्थ पर एक आखिरी सवाल।

हम कार्ल बार्थ के बारे में बात करना पसंद करते हैं। वह नव-रूढ़िवाद, इंजीलवाद, अमेरिकी ईसाई धर्म में क्या होने जा रहा है, इसके लिए धर्मशास्त्र की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं, जब हम अपने मित्रों, नीबूर भाइयों से मिलते हैं। नहीं? ठीक है।

आपके दिलों को आशीर्वाद मिले। आपका दिन शुभ हो।

यह डॉ. रोजर ग्रीन द्वारा अमेरिकी ईसाई धर्म पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह नव-रूढ़िवाद और सामाजिक संकट पर सत्र 21 है।